ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL
A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION
CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 19. 06 .2020

पाठ नाम - अवकाशवाली सभ्यता

आदमी अत्यधिक सुखों के

लोभ से ग्रस्त है

यही लोभ उसे मारेगा |

मनुष्य और किसी से नहीं,

अपने आविष्कार से हारेगा |

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- कवि मनुष्य के लोभी स्वभाव की ओर इंगित करते हुए बताना चाहते है कि यह लोभी स्वभाव ही उसके विनाश का कारण बनेगा|

व्याख्या - मनुष्य का यह स्वभाव है कि उसे जितना मिलता है, वह उससे कहीं ज्यादा की आशा करने लगता है | मानव अपने लोभ के वशीभूत होकर वैज्ञानिक आविष्कार करता है | जिससे उसका जीवन यंत्रवत बन जाता है | अपने जीवन को सुविधा संपन्न बनाने के उद्देश्य से मानव समाज ने विज्ञान का दोहन किया है | परिणामस्वरुप आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा है|

इन्सान ने परमाणु हथियार बनाए,कई ऐसे खतरनाक प्रयोग किए, जिस वजह से आज उसका अस्तित्व खतरे में पड़ गया है | उस समय उसने जरा भी नहीं सोचा की इन वैज्ञानिक प्रयोगों का इस्तेमाल कितना खतरनाक हो सकता है | वह एक वैज्ञानिक प्रयोग में सफल हुआ ,तो उसके अन्दर दूसरे आविष्कारों की लालसा जगी ,और इस लालसा ने उसकी मौत को बहुत

आसन बना दिया | अगर अब भी समय रहते उसने अपनी लोभी वृति को कम नहीं किया ,तो फिर मानव समाज का विनाश निश्चित है |

गाँधी कहते थे

अवकाश बुरा है,

आदमी को हर समय

किसी काम में लगाये रहो |

जब अवकाश बढ़ता है,

आदमी की आत्मा ऊँघने लगती है |

उचित है कि ज्यादा समय

उसे करघे पर जगाये रहो |

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियों के जरिए कवि मनुष्य को कार्यशील बने रहने के लिए कहते है |

व्याख्या - कवि इन पंक्तिओं के जरिए मनुष्य को गाँधी जी के विचारों से अवगत कराते है |

गाँधी जी सदैव इन मशीनों का विरोध करते थे |वे जानते थे कि इंसान जितना इन मशीनों पर निर्भर रहेगा ,उसके जीवन से कार्यशीलता ख़त्म होती जायगी | वह काम करने से दूर भागेगा | उसके जीवन शैली में कार्य न करने की प्रवृति बढती जाएगी | वह अवसाद का शिकार होता जाएगा | इसलिए उसे हर समय किसी न किसी काम में खुद को व्यस्त रखना चाहिए, क्यूंकि जब मनुष्य के पास काम नहीं रहेगा , वह जितना खाली बैठा रहेगा ,वह उतना ही अकर्मण्य बनता जाएगा | कहा भी गया है खाली दिमाग शैतान का घर | उसका मन बुराई की ओर अग्रसर होगा | गाँधी जी ने हमेशा ही कुटीर उद्योग को बढ़ावा दिया है |इससे एक तो देश में काम की कमी नहीं होगी और सभी मनुष्यों को रोजगार भी मिलेगा | फिर उसके पास खाली

बैठे रहने का प्रश्न भी नहीं रहेगा | हम जितना अपने दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक आविष्कारों पर निर्भर रहेंगे, हम धीरे- धीरे अवसादी बनते जाएँगे | इसलिए जरुरी है कि हम निरंतर काम में स्वयं को लगाये रखे|

अवकाशवाली सभ्यता

अब आने ही वाली है |

आदमी खायेगा , पियेगा

और मस्त रहेगा |

अभाव उसे और किसी चीज का नहीं

केवल काम का होगा |

वह सुख तो भोगेगा

मगर अवकाश से त्रस्त रहेगा |

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियों के जरिए कवि कहते है कि मशीनीकरण हमें आलसी और बेरोजगार बना देगा |

व्याख्या - कवि के अनुसार अब ऐसी सभ्यता आने वाली है ,जब मनुष्य के पास कोई भी काम नहीं रहेगा | उसका जीवन भोग-विलास में ही व्यतीत होगा | उसका जीवन सुखी और समृद्ध तो रहेगी ,लेकिन उसे काम न करना खलेगा | उसका जीवन में खालीपन रहेगा क्यूंकि वह काम के अभाव से जूझेगा | यही उसके जीवन की सबसे बड़ी पीड़ादायक स्थिति रहेगी |

हम मशीनों के इतने आदि हो गए है कि एक छोटा सा काम करने के लिए तुरंत ही किसी वैज्ञानिक आविष्कार की ओर बढ़ जाते है , जिससे हमारा काम करने की आदत पीछे छूटने लगती है | हम सुविधाओं के आदि बन जाते है, और हमारे जीवन में “अवकाश” अपना स्थान

बनाने लगता है | अगर हम अभी भी समय रहते अपने आदतों को नहीं बदलते तो इसका परिणाम भी भयावह होगा |

दुनिया घूमकर

इस निश्चय पर पहुँचेगी

कि सारा भार विज्ञान पर

डालना बुरा है |

आदमी को चाहिए कि वह

खुद भी कुछ काम करे |

हाँ, यह अच्छा है

कि काम से थका हुआ आदमी

आराम करे |

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियों में बताया गया है कि विज्ञान किस प्रकार से मानव समाज के लिए अभिशाप बन गया है |

व्याख्या - वैज्ञानिक आविष्कारों का सुख भोगने के बाद मानव समाज को यह एहसास होगा कि अपनी सफलता के लिए विज्ञान पर निर्भर रहना कितना घातक है | तब तक शायद बहुत देरी हो चुकी होगी | इसलिए आवश्यक है कि वह अपना काम स्वयं करना सीखे ,और अपना काम करते हुए कोई भी व्यक्ति अगर थक जाता है तो वह बेशक आराम करे |इन पंक्तिओं के जरिए कवि हमारी कर्मण्यता को जगाना की कोशिश करते है| वैज्ञानिक आविष्कारों नेमानवीय मूल्यों को खोखला बना दिया है | जो व्यक्ति कभी आत्मनिर्भर रहता था, उसी मशीनीकरण ने आज सम्पूर्ण मानव समाज को अपाहिज सा बना दिया है | अत: यह जरुरी है कि हम समय रहते

अपने जीवन शैली में बदलाव लाए| तभी हम यंत्र की गुलामी से मुक्त हो पाएँगे | मेहनत करके थका हुआ व्यक्ति अगर "अवकाश" लेता है , तब वह सहीभी है, बिना काम किए बेकार बैठेरहने से |

संक्षिप्त उतरीय प्रश्न :

1. अभाव उसे आर किसी चीज का नहीं (1+2=3)

केवल काम का होगा

i)काम का अभाव किसे होगा और क्यों?

उ. i) काम का अभाव मनुष्य को होगा | मानव जितना अपने कार्यों को पूरा करने के लिए मशीनों पर निर्भर होता जाएगा, वह उतना ही आलसी बनता जाएगा | एक समय ऐसा आएगा जब मशीनें ही उसके स्थान पर कार्य करेगी,और वह खाली बैठा रहेगा | उसके जीवन में सुख और सुविधा के सभी साधन होगें,लेकिन उसके पास कोई काम नहीं रहेगा, और वह अपना समय यूँ ही खाली व्यतीत करेगा | इसलिए कवि कहते है कि मनुष्य के पास काम का अभाव होगा |

2. **उचित है कि ज्यादा समय**

उसे करघे पर लगाये रहो (1+1+1=3)

i) कवि का नाम लिखे |

ii) **करघे पर लगाये रहो का सांकेतित अर्थ क्या है ?**

iii) "उसे" से कौन संकेतित है ?

उ. i) कवि का नाम रामधारी सिंह दिनकर है |

ii) जिस प्रकार से कपड़े बुनने का यंत्र हमेशा चलता रहता है, वैसे ही मनुष्य को निरंतर किसी न किसी कार्य में लगे रहना चाहिए |

iii) "उसे" से मनुष्य की ओर संकेतकिया गया है |

3. "सारा भार विज्ञान पर डालना बुरा है" ---- (2+1=3)

i) कवि ऐसा क्यों कहते है ?

ii) प्रस्तुत अंश किस पाठ का है ?

उ. i.हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में छोटे-छोटे काम के लिए भी अगर विज्ञान पर निर्भर हो जाएँगे,तब फिर मानव सभ्यता का विकास संभव नहीं होगा | कवि अनुसार विज्ञान हमें आलसी और बेकार बना देगा | इसलिए यह आवश्यक है कि हम स्वयं को मशीनीकरण से बचायं और कार्यशील बने रहे |

ii) प्रस्तुत अंश अवकाशवाली सभ्यता कविता से लिया गया है |

4. i) कवि ने किसे "मानवता का आगामी पीठ" कहा है? नाम लिखे | ये पीठ कहाँ स्थित है?

ii) दुनिया क्यों झुलसने लगेगी ? (2+1=3)

उ.i. कवि ने साबरमती, पाण्डिचेरी,तिरुवणमलइ और दक्षिणेश्वर को "मानवता का आगामी पीठ" कहा है | ये पीठ भारत देश में स्थित है |

ii) मानवीय मूल्यों यथा विश्वबंधुत्व,मित्रता,सत्य, अहिंसा आदि के ह्रास होने के कारण दुनिया झुलसने लगेगी |

5. "अवकाश" को बुरा किसने कहा है ? और क्यों ? (1+2=3)

उ. "अवकाश" को बुरा गाँधी जी ने कहा है | मनुष्य के जीवन में अवकाश तभी आएगा जब वह काम नहीं करेगा ,और ऐसा विज्ञान के कारण ही होगा | विज्ञान द्वारा किए जाने वाले आविष्कारों से मनुष्य की जिंदगी यांत्रिक हो जाएगी | उसके द्वारा किए जाने वाले सारे काम जब मशीन करने लगेगें तब वह "अवकाश" में रहेगा और उसका विकास का मार्ग बाधित होगा | इसलिए गाँधीजी ने "अवकाश" को बुरा कहा है |

शब्दार्थ:

अवकाश- छुट्टी

अनागत- अज्ञात

सितारे- तारा

आविष्कार- नवनिर्माण

दुनिया- संसार

अभाव- कमी

सभ्यता- एक विशेष समय और स्थान पर एक विशेष समाज

NAME-PRITI TIWARI